APOGEE 2023
A HIVEMIND GENESIS
31ST MARCH - 3RD APRIL

हिन्दी प्रेस क्लब

प्रवाह

दिवस 2 | अंक 1

संपादकीय

नमस्कार! आशा है कि आप सभी अपोजी के इस 41 वे संस्करण का जी भर कर आनंद ले रहे होंगे। उद्घाटन के बाद से ही मानो एक के बाद एक विभिन्न कार्यक्रमों की झड़ी लग चुकी है। कभी कोई FD3 की छत पर तारों भरे आकाश को देख रहा है, तो कहीं कोई सारे कैम्पस में अलग-अलग जगहों पर मर्डर-मिस्ट्री के सुराग ढूँढने में लगा हुआ है। हर कोई अपनी ही मस्ती में लीन है। मुझे तो ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मानों ओएसिस के पश्चात इस वीरान पड़े कैम्पस पर मौज-मस्ती की ठंडी बरसात हो चुकी है। चारों तरफ़ आनंद का वातावरण है। इसी खुशी के लिए तो हम सब महीनों से तैयारियाँ करते हैं। CoStAA और सभी क्लबों ने दो-तीन महीने पूर्व से ही इस फेस्ट की तैयारियाँ आरंभ कर दी थी। न जाने कितनी मीटिंग्स कितने फोन कॉल्स और असीम परिश्रम का यह परिणाम है।

CoStAA से याद आया, आपने उद्घाटन समारोह में तो देखा ही होगा किस तरह से एक-एक करके सारे डिपार्टमेंट हेड्स की खिचाई हो रही थी। हालाँकि, यह हमारे बिट्स की एक प्रथा है, प्रत्येक फेस्ट में इस प्रकार से आयोजक समिति के हेड्स से मस्ती की जाती है। परंतु मुझे इस वर्ष का यह वाला हिस्सा कुछ रुचिकर नहीं लगा। कारण इस वर्ष मज़ाक करते समय कुछ-कुछ जगह अभद्र भाषा का प्रयोग किया गया जो मेरे अनुसार उचित नहीं था। इसके अतिरिक्त सारा कार्यक्रम अत्यंत ही मनमोहक और अच्छा था।

पहले दिन के कार्यक्रमों में जो मुझे सबसे प्रिय लगा वो था सुहानी शाह का प्रोफ़ शो। वास्तव में उनकी प्रतिभा अद्भुत है। चेहरा पढ़कर मन की बात जान लेना कोई साधारण कार्य नहीं है। ऐसी दक्षता हांसिल करने में अथक प्रयास और असीम धैर्य की आवश्यकता होती है। सुहानी जी इतनी कम उम्र में ही इस मुकाम तक पहुँच गईं हैं, इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाये कम है।

इसके पश्चात अपोजी में प्रथम बार आयोजित ड्रोन शो के तो क्या ही कहने हैं। कला और तकनीक का ऐसा संगम बहुत कम ही देखने को मिलता है। हवा में उड़ते सैकड़ों ड्रोन और उनसे बनती अनेक कलाकृतियाँ किसी को भी अचंभित करने में सक्षम थीं। हालांकि शो की अवधि मुझे थोड़ी कम लगी किन्तु इसके बावजूद भी आनंद आया।

और इसी के साथ अपोजी 2023 का दिवस 1 अपने अंजाम तक पहुंचा। बस अब मैं अपनी बात यहीं समाप्त करता हूँ। आपने अपना समय देकर मेरा लेख पढ़ा उसके लिए बहुत-बहुत शुक्रिया। आशा है अपोजी का भरपूर मज़ा लें। आपके चेहरे पर खुशी सदा बनी रहे।

धन्यवाद।!!!

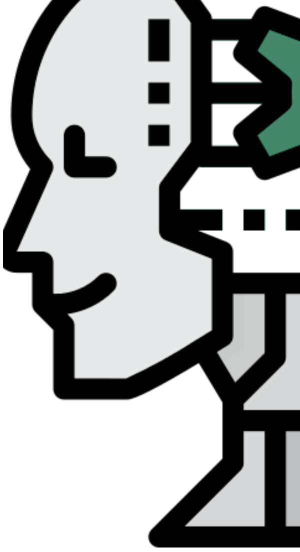

ARDUINO CHALLENGE

ARDUINO Challenge कार्यक्रम का आयोजन बिट्स के EEE संगठन के द्वारा FD-1 में रूम 1204 में करवाया गया। इसमें हिस्सा लेने वालों ने 3 लोगों तक की टीमों में भाग लेते हुए साथ मिलकर इलेक्ट्रिक सर्किट की मदद से ARDUINO का निर्माण किया। ARDUINO का उपयोग रोज़ाना की जिंदगी में गाड़ियों के साथ-साथ और भी कई सारी प्रणालियों में होता है। प्रतिभागियों ने इसमें अपने मित्रों के साथ काफी आनंद उठाया और साथ में उन्हें बहुत कुछ नया सीखने को भी मिला। क्लब के प्रभारियों ने लोगों को ARDUINO और उसके महत्व के बारे में समझाया और उनका मार्गदर्शन करते हुए उन्हें सभी इलेक्ट्रिक कॉम्पोनेन्ट को भी एक-साथ जोड़ने में मदद करी। इस कार्यक्रम ने वाकई में टेक-फेस्ट का उद्देश्य पूरा करते हुए लोगों को मज़े-मज़े में ARDUINO के बारे में शिक्षित करने का काम करा है।

केम-ई-कार

यह इवेंट AIChE ने आयोजित कराया था। इसमें एक गाड़ी की प्रदर्शनी थी और एक मनोरंजक खेल था। साई शराज़ नाम के इस खेल में तीन श्रेणियाँ थी – कल्पित विज्ञान, पॉप कल्चर एवं मशहूर वैज्ञानिक संशोधन। जैसे दम्शेराज़ में इशारों से बात की जाती है वैसे ही इसमें चित्रों का प्रयोग किया जाता है। इस खेल में सबसे अधिक अंक वाले प्रतियोगी को पोइंट्स दिए जायेंगे जिससे वह CHEM E CAR के स्टाल्स से सामान खरीद सकेगा। कार की जानकारी देने के लिए एक विडियो भी प्रतियोगियों को दिखाई गई थी। कार के शुरू होते ही एक आयोडीन क्लॉक रिएक्शन आरम्भ होता है। इस रिएक्शन में कुछ समय बाद रंग बदल जाता है और उस समय कार रुक जाती है क्योंकि उसके सन्चालन की ऊर्जा इसी रिएक्शन से उत्पन्न होती है।

टीम बिट्स

अपोजी 2023 मे टीम बिट्स ने एम्-लॉन्स मे एक स्टॉल लगाया था। यह एक अति रोमांचक और आनन्दमय कार्यक्रम था। इसमें टीम बिट्स के सदस्यों ने अपने द्वारा बनाईं गयी पुरानी गाड़ियों का प्रदर्शन करा था और उसके साथ-साथ गाड़ियों के इंजिन्स को भी दिखाया गया था। लोगों को फ्यूल एफ़िफ़िशिएन्ट और ज़्यादा माइलेज देने वाली गाड़ियों को देखने का मौका मिला। टीम बिट्स एक शैल एको नामक प्रतियोगिता मे भाग लेती है। कुल मिलाकर यह एक अनूठा कार्यक्रम था जो अत्यंत दिलचस्प रहा और यह दिलचस्पी सभी दर्शको मे भी देखने को मिली। इसी कारण बड़ी तादात मे लोग आए और आयोजन की प्रशंसा की।

ग़ज़लों का गलियारा

चौपाल कार्यक्रम को पोएट्री क्लब के द्वारा PEP के पैपायरस ट्रेल्स अंतर्गत FD-2 QT में शाम 5 बजे कराया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आर-जे मिर्ची आमिर और मीनू बक्शी जी को बुलाया गया था। उन्होंने अपनी कई गज़लें और रचनायें प्रस्तुत की और साथ ही में इन सभी की संरचना के बारे में संक्षेप में बात की। कवियों ने उर्दू भाषा में सालों से लिखी जा रही इन कविताओं का प्रचार करने का सन्देश दिया और आए हुए लोगों को गज़लें लिखने के लिए बुनियादी जानकारी प्रदान करी। उन्होंने कईं सारे लोकप्रिय कवियों की भी गज़लें सुनाई। आए हुए छात्रों में कार्यक्रम को लेकर खास दिलचस्पी दिखी और सभी ने कार्यक्रम का पूर्ण आनंद उठाते हुए बहुत कुछ सीखा। गज़लों और नज़्मों के प्रशंसकों के लिए यह कार्यक्रम किसी जन्नत से कम नही था।

दर्द को समझो

इसका आयोजन PARC ने करवाया है। यह तीनों दिन उपलब्ध रहेगा। यह सिमुलेटर स्त्रियों के प्रति लोगों की संवेदनशीलता को बढ़ाने में सहायक रहेगा। जैसा कि इसका नाम बताता है, यह सिमुलेटर माहवारी का दर्द पुरुषों को अनुभव कराता है। इसमें दर्द के दस स्तर रखे गए हैं। हर एक स्तर पिछले से ज़्यादा असहनीय रखा गया है। इस अनुभव को वैसे तो पैसे से नहीं तोला जा सकता मगर इस सिमुलेटर में 100 रूपए का शुल्क रखा गया है। पेट पर तश्तरियों की सहायता से खिचाव का अनुभव करवाया जा रहा है। प्रतिभागियों से बात-चीत करने पर पता चला कि यह आयोजन अपने उद्देश्य में सफल रहा क्योंकि इसे अनुभव करने के बाद कोई भी इस दर्द को कम नहीं समझेगा।

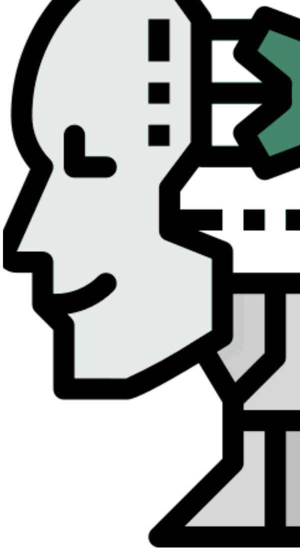

निर्माण स्टॉल्स

निर्माण एक गैर-सरकारी संगठन है जो अपने प्रोजेक्ट के अंतर्गत महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में काम करता है। निर्माण स्टाल्स पर हाथ से बनी बहुत सी वस्तुएँ बेची जा रही हैं। इनमें रुमाल, स्क्रन्ची, ज्यूट वॉल हैंगिंग, छल्ले इत्यादि शामिल हैं। यह सब वस्तुएँ पास की ग्रामीण औरतों द्वारा बनाई गई हैं और मुनाफ़ा भी लाभार्थी महिलाओं में बाँटा जायेगा। प्रगति योजना में लड़कियों को कलाएँ सिखाई जाती हैं और वे उनकी मदद से वस्तुएँ उत्पादित करती हैं। स्वयमशक्ति परियोजना में 35-40 वर्षीय महिलाएँ अपने खाली समय में सामान बनाकर निर्माण को देती हैं। इस प्रकार निर्माण महिलाओं और ग्राहकों के बीच एक पुल का काम करता है और ग्रामीण महिलाओं को बढ़ावा देता है।

बूँद फ़िसली तो जीते

केम-एसोक ने अपोजी 2023 मे एक रोमांचक इवेंट का आयोजन किया जिसका नाम लेबिरिन्थ था। यह कार्यक्रम FD2 में आयोजित किया गया था और इसमें काफ़ी लोगों ने भाग लिया था। प्रतिभागियों को गेम-टेबल पर जाकर कुछ हाइड्रोफोबिक बोर्ड्स दिए गए थे और उन्हें एक पानी की बूँद को हाइड्रोफोबिक बोर्ड के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुंचाना था। परन्तु जितना आसान यह लग रहा है उतना आसान यह था नहीं, यह अत्यंत दिलचस्प कार्यक्रम था और उसके साथ-साथ इसने लोगों को वैज्ञानिक ज्ञान भी प्रदान किया। यह समय सीमा पर आधारित था और प्रतिभागियों को कम से कम समय मे इस पानी की बूँद को आखिरी सिरे तक लेकर जाना था और जो भी 8 सेकंड से कम समय मे इसे आखरी सिरे तक लेकर जाएगा वह विजेता होगा। इवेंट मे कई लोगों ने दिलचस्पी दिखाई और आखिर मे यह सभी प्रतिभागियों के लिए एक मज़ेदार अनुभव रहा।

पेडल फॉर मेडल

इस इवेंट को रिन्यूएबल एनर्जी क्लब ने आयोजित कराया था। जैसा कि क्लब का नाम है, उन्होंने ऊर्जा पुनर्निर्माण हेतु आयोजन किया था। साइकिल चलाकर विद्युत उत्पादित करने के लिए साइकिल पर एक परिपथ (सर्किट) जोड़ा गया था जो यांत्रिक(मेकेनिकल) ऊर्जा को विद्युत(इलेक्ट्रिकल) ऊर्जा में परिवर्तित कर रहा था। प्रत्येक प्रतिभागी को 20 सेकंड के लिए साइकिल चलाने का अवसर प्रदान किया गया। एक कम्प्युटर कोड की सहायता से हर एक प्रतिभागी द्वारा तय की गई दूरी और उत्पादित विद्युत भी नापी जा रही थी। प्रत्येक दस मीटर दूरी को एक LED लाइट जलने से अंकित किया जा रहा था। दो दिन में सर्वाधिक दूरी तय करने वाले प्रतियोगी को ईनाम भी दिए जायेंगे। यह इवेंट ग्रीन-एनर्जी के उत्पाद को बढ़ावा देता है। लोगों ने भी इस इवेंट की ख़ूब सराहना की और पर्यावरण की ओर अपना हाथ बढ़ाया।

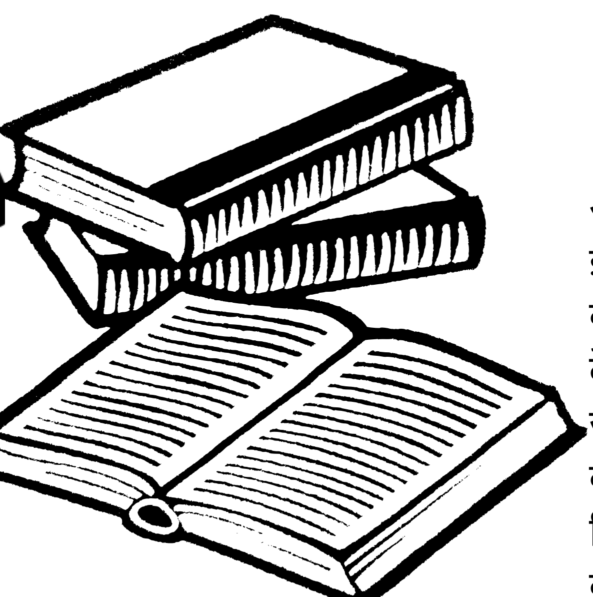

शोधकर्ता की ख़ोज

बिट्स के जीवविज्ञान संगठन द्वारा DEXTERS LAB नामक एक एस्केप रूम इवेंट FD-3 के रूम 3219 में कराया गया। इस इवेंट में जीवविज्ञान और एस्केप रूम इवेंट को मिला दिया गया जहाँ छोटे-छोटे प्रयोग के ज़रिये भाग लेने वाली टीमों को सुराग इकट्ठा करने थे। इस कार्यक्रम में लोगों को टीमों में भाग लेते हुए
45 मिनट के अंदर-अंदर, एस्केप रूम इवेंट पूरा करते हुए अगवा हुए शोधकर्ता के रहस्य का पता लगाना था। यह एक बहुत मज़ेदार कार्यक्रम था जिसमें लोग अपने मित्रों के साथ टीम में भाग लेते हुए साथ में प्रयोग कर रहे थे। लोगों ने इस इवेंट का काफी लुत्फ़ उठाया और उन्हें इस कार्यक्रम में मिलकर भाग लेने में बहुत आनंद आया। लोगों को इस कार्यक्रम से जीवविज्ञान के बारे में सीखने का भी मौका मिला।

बुक चोर

अपोजी 2023 मे मैट्रिक्स ने एक अनूठा इवेंट, बुक चोर का आयोजन किया था। इस बेहद दिलचस्प इवेंट में मात्र 1200 की राशि देकर प्रतिभागी को अपनी इच्छानुसार किताबें जीतने का मौका मिलता है। सारे प्रतिभागियों को एक बड़ा सा डिब्बा दिया गया और विभिन्न विषयों की किताबें प्रदान की गयीं। इस डिब्बे का आकार निर्धारित था और इसमें जितनी भी किताबें भरी जा सकती हैं उतनी भरनी हैं और अंत में वह सभी किताबें आपकी होजाएंगी। यह न सिर्फ़ एक मनोरंजक कार्यक्रम था बल्कि प्रतिभागियों को किताबें जीतने का भी मौका मिल रहा था। कुल मिलाकर काफ़ी लोगो ने इसमें भाग लिया और रुचि दिखाई।

सूरज की किचन

अपोजी 2023 में अनेक प्रकार के व्यंजन हमें चखने को मिले परन्तु सबसे अनोखे और दिलचस्प व्यंजन सोलर कुक्ड फ़ूड स्टाल पर दिखाई दिए। जैसे कि नाम से ही पता चलता है इसमें सूरज की किरणों का उपयोग करके स्वादिष्ट व्यंजन बनाए गए। इस स्टॉल की एक और ख़ास बात यह थी कि इसका आयोजन प्रोफ़ेसर मनोज सोनी द्वारा किया गया था। बड़ी तादात में लोग इन व्यंजनों का ज़ायका लेने आये थे, जिसमें केक आदि शामिल थे। व्यंजन में केक, पिज़्ज़ा और साबूदाना खिचड़ी थे। कुल मिलाकर इस इवेंट में कई लोगों ने
दिलचस्पी दिखाई और आखिर में यह सभी के लिए एक मज़ेदार अनुभव रहा।

रोबोट्स का कुरुक्षेत्र

कल लगभग 2 घंटे की BST के बाद, आज रोबोट्स एट वार अपने निर्धारित समय से शुरू हुआ। आज रोबोट्स और उनके बीच के युद्ध दर्शकों की उम्मीदों पर खड़े उतरे। जैसे-जैसे रोबोट्स के टकराने पर चिंगारियाँ निकलती गई वैसे-वैसे जनता के बीच उत्साह उमड़ता गया। विजेता को Rs.65000 और दूसरे स्थान पर आने वाली टीम को Rs.40000 की धनराशि मिली। आज नियमों में भी कुछ परिवर्तन देखने मिले, जैसे कि आज रोबोट्स पर समय की पाबंदी नहीं थी। हर राउंड के बीच आधे घंटे का विराम था। इस विराम में क्रिस रोबोटिक्स के प्रायोजक द्वारा जल-पान की सुविधा भी प्रदान की गई थी। साथ ही सभी लोगों के मनोरंजन का भी इंतज़ाम किया गया था। इसलिए बीच के आधे घंटे में स्पीकर पर जनता की माँग के गाने भी चलाए गए जिसपर सबने खूब ठुमके लगाए।

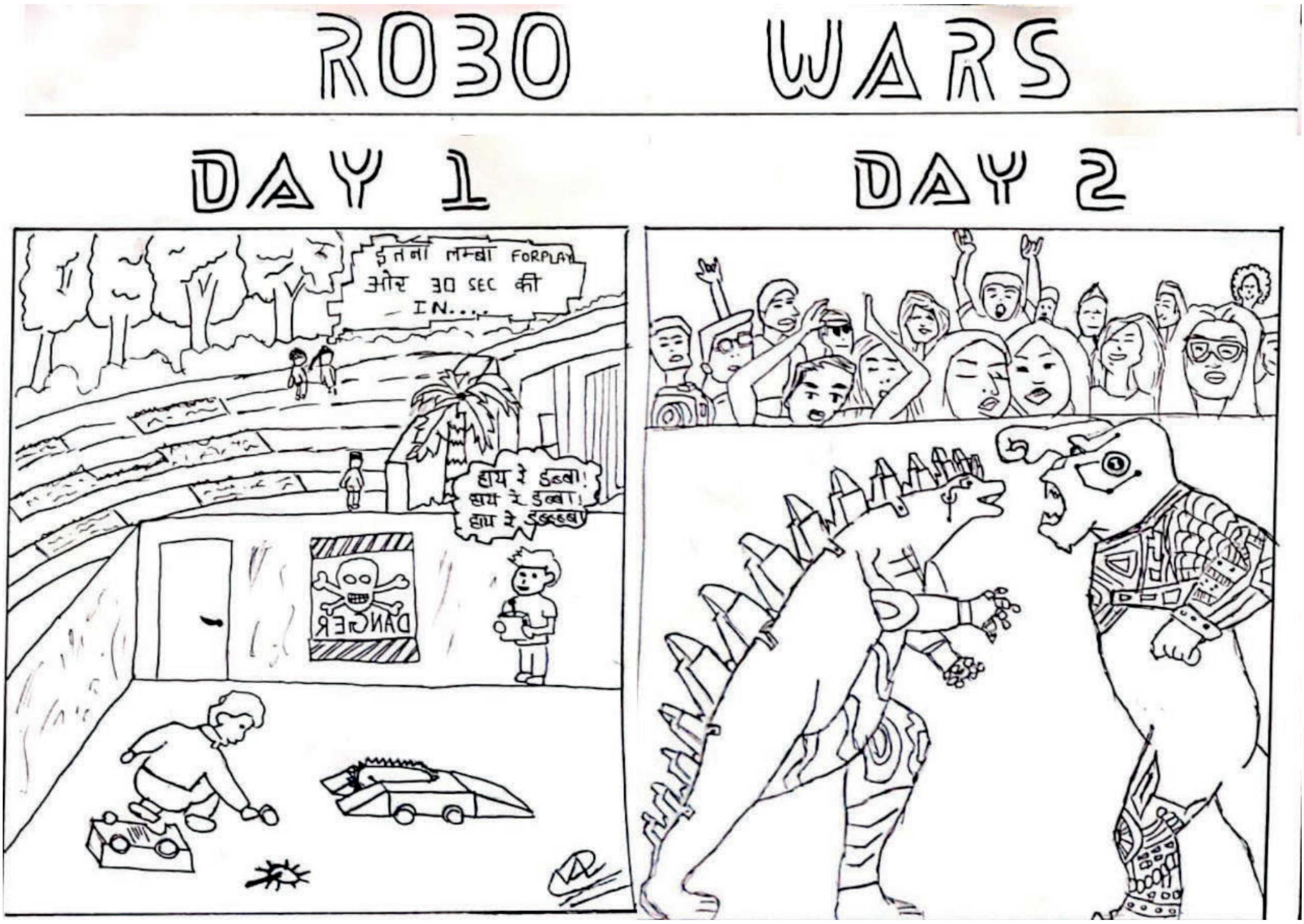
ROBO WARS
DAY 1
DAY 2
इतना लम्बा FORPLAY ओर 30 SEC की IN....
हाय रे डब्बा! हाय रे डब्बा! हाय रे डब्बा
DANGER

मेंटलिस्ट से बात

“Success is not a destination it is an ongoing journey” -Suhani Shah.

सुहानी शाह के यूट्यूब पर 3.5 मिलियन सब्सक्राइबरस हैं और उनकी इंस्टाग्राम रील्स लगभग देखते हैं। उन्होंने बहुत ही छोटी उम्र में डिप्लोमा ले लिया था, राज्य स्तर पर स्विम्मिंग की और जादुई दुनिया में कदम रखा। वे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में सबसे छोटी मैजिशियन के नाम से जानी जाती हैं। आईए जानते हैं अपोजी हिंदी प्रेस से साक्षात्कार के दौरान उन्होंने हमें क्या कुछ बताया।

प्रश्न- आपने पारंपरिक स्कूलिंग से हटकर कुछ अलग करने का ठाना, जहाँ तक मुझे लगता है टिपिकल इंडियन माता-पिता इसके लिए कभी नहीं मानेंगे, आपने अपने माता-पिता को कैसे मनाया?

उत्तर- मेरे माता पिता की तरफ से मेरे ऊपर कोई दवाब नहीं था इसके अतिरिक्त उन्होंने मुझे मैजिक करने के लिए हमेशा प्रेरित ही किया, उन्होंने मेरे टैलेंट पर भरोसा किया, क्योंकि मेरे परीक्षाएं , शो के बीच में आ रहे थे इसलिए मेरे पापा ने सात साल की उम्र में मुझे सामान्य शिक्षा की जगह, मेरे टैलेंट पर ध्यान देने पर प्रेरित किया।

प्रश्न- मुझे याद है जब मैं पहली बार स्टेज पर गया था तब मुझे स्टेज फियर हुआ था। इतनी कम उम्र में आपने स्टेज पर मैजिक किया क्या आपको भी कभी स्टेज फियर का एहसास हुआ है?

उत्तर- जब आप बहुत छोटे होते हैं तब आपको प्रस्तुति का दवाब नहीं होता है, क्यूंकि सिर्फ आपको कुछ काम करने में मज़ा आता है आप उसे बिना झिझके करते हो। इतनी छोटी उम्र में मुझे वो फियर नहीं डेवलप हुआ था और करते करते आप उस अवस्था को पार कर लेते हो और फिर धीरे-धीरे आपके अंदर आत्मविश्वास बढ़ने लगता है।

प्रश्न- आपके टैलेंट की सरहाना करते हुए आपके फैन्स ने SuSha Squad बना दी है, इस SuSha squad के प्रति आपकी क्या भावना है?

उत्तर- SuSha नाम मुझे काफ़ी पसंद आया यहाँ तक कि मैं अपने आप को SuSha नाम से संबोधित करने को बोलती हूँ। मेरे फैन्स ने मुझे बहुत प्यार दिया है और सदैव मेरी प्रशंसा की है। आज मैं जिस मुकाम पर हूँ उसका सारा श्रेय मेरे फैन्स को जाता है। जब तक मेरे फैन्स मेरे साथ हैं SuSha अपना जादू करती रहेगी और लोगों का मनोरंजन होता रहेगा।

प्रश्न- जैसे आपको पता ही होगा कि अपोजी 2023 का थीम है The Hivemind Genesis, क्या आपके जादू में हमें इस थीम कि झलक देखने को मिल सकती है?

उत्तर- Hivemind मतलब होता है आपस में जानकारी और राय साझा करके आपस में समन्वय बैठना। इसी प्रकार मैं लोगों के सामने अपना जादू प्रस्तुत करती हूँ इससे लोग इन्फ्लुएंस होते हैं और उनमें जादू की ताकत के प्रति जिज्ञासा बढ़ती है। जिसकी झलक आपको मेरे शो में देखने को मिल जाएगी। जैसा कि हम जानते हैं

सुहानी शाह बहुत बड़ी कलाकार हैं लेकिन उनमें कोई घमंड नहीं है। अक्सर इस कद पर पहुँच कर एक इंसान में गुरूर आ जाता है लेकिन यह कहना पड़ेगा कि सुहानी बहुत डाउन टू अर्थ हैं। अपने कार्यक्रम से उन्होंने सबके दिल जीत लिए। जिस प्रकार से उन्होंने जादू दिखाया दर्शकों की आँखें खुली की खुली ही रह गयीं। दर्शकों की सह-भागिता काफ़ी ज्यादा थी। लोगों को उनके कार्यक्रम के दौरान हर क्षण आश्चर्य और कौतुक से भरा था। इसमें ज़रा भी संदेह नहीं कि सुहानी का व्यक्तित्व एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व है।

दिबाकर बनर्जी से साक्षात्कार

प्रख्यात फ़िल्म निर्देशक, नेशनल फ़िल्म अवार्ड से सम्मानित दिबाकर बनर्जी ने अपोजी हिन्दी प्रेस से वार्ता करते हुए अपने विचार साझा किये। उन्होंने अपनी ज़िंदगी से जुड़े कई सवालों के जवाब दिये और एक विद्यार्थी से निर्देशक तक की यात्रा का विवरण दिया।

प्रश्नः आपको बिट्स आकर कैसा महसूस हो रहा है?
उत्तर: बिट्स आकर मुझे आपने कॉलेज जिंदगी की कुछ खोई हुई यादें वापस आ रही हैं। कैम्पस का जो एक माहौल होता है – खुला आसमान, पेड़-पौधे, विद्यार्थी अपनी कक्षाएँ जाते हुए, कुछ बैठे हुए लोग आपस में बातचीत करते हुए – वो यादें वापस आ गई।

प्रश्नः आपने अपनी जिंदगी में एक फिल्म निर्देशक बनने का फ़ैसला कब लिया और आपकी शुरुवाती यात्रा कैसी रही?
उत्तर: फ़िल्में, मैं काफ़ी समय से बनाना चाहता था। जब मैं बारहवीं कक्षा में था तब मुझे पता चला कि NID में एक फ़िल्म मेकिंग का कोर्स हैं और वहाँ दाखिला करा लिया। पर वहाँ जाकर पता चला की फ़िल्म मेकिंग पढाने के पहले डिज़ाइन दो-तीन साल पढ़ाया जायेगा जिस कारण मेरी वहाँ पढ़ाई में रूचि कम हो गई। आखिरकार मैंने कॉलेज ड्रॉपआउट कर दिल्ली आ गया और विज्ञापन फ़िल्म बनाने लगा क्योंकि मुझे लगा कि इस तरह की फ़िल्म बनाकर मैं फ़िल्म निर्देशन की दिशा में आगे बढ़ सकता हूँ जो आखिरकार मेरे लिए सच निकला। विज्ञापन फिल्म बनाकर मेरे अंदर एक ऐसा आत्मविश्वास आ गया कि मैं फ़िल्म निर्देशन कर सकता हूँ और इसी आत्मविश्वास ने मुझे मेरी पहली फ़िल्म "खोसला का घोसला" बनाते वक्त मदद की।

प्रश्नः आपने बताया की आपने दो सेमस्टर ड्रॉप लिए थे और आखिरकार कॉलेज से ड्रॉपआउट भी लिया। आप इसी सिलसिले में बिट्स के उन छात्रों को क्या सलाह देंगे जो जल्दी हताश हो जाते हें।
उत्तर:– मैं यही कहना चाहता हूँ की अपने करियर के बारे मे सोचे और समझदारी से काम करें पर गलती करने से मत डरे। यह मत सोचे कि गलती करूँगा तो इसका नतीज़ा क्या होगा? अभी आपको खुद को बेहतर करने के बहुत मौके मिलेंगे। अगर इस उम्र में आप सही बीज बोओगे तो आपको उसका फ़ायदा उम्रभर मिलेगा। आखिरकर यह समय कभी वापस नहीं आयेगा।

प्रश्नः आपने काफ़ी सारी फ़िल्में बनायीं हें तो आपकी कोई ऐसी यादगार फिल्म जो आपके साथ अभी भी हें।
उत्तर: नहीं मेरी कोई फ़िल्म मेरी साथ लंबे समय तक नहीं रहती क्यूंकि फिल्म जब फिल्म खत्म होते ही तो मेरा फिल्म से रिश्ता भी खत्म हो जाता हें। हाँ, उस फ़िल्म को बनाने के प्रक्रिया से मेरा रिश्ता रहता हें। मेरी सोच में मेरी नई फिल्म तीस के निर्देशक और मेरी पहली फ़िल्म खोसला का घोसला के निर्देशक में शायद एक ब्राह्मण का फर्क है।

प्रश्न: आपने काफ़ी साल पहले भी फ़िल्में बनायीं हैं और आजकल भी फ़िल्में बना रहे हैं। आपको आजकल के समय के अभिनेता और पहले के समय के अभिनेताओं में क्या फर्क लगता हें?
उत्तर: जो मुझे सबसे बड़ा फ़र्क लगता है जिससे करन जोहर भी सहमत हैं वो यह है की आजकल के अभिनेताओं को अपने डाईलॉग याद नहीं रहते हैं पर पुराने सारे अभिनेताओं को अपने सारे डाईलॉग पूरी तरह से याद रहते थे।

प्रश्न: आपने अपोजी के कुछ अंश को देखा हें और BITS के माहौल को महसूस किया तो आपको लगता हें क्या की यह आपकी फिल्म के हिस्से को प्रभाव डालेगा?
उत्तर: कैम्पस आते वक्त वाड्रा के रस्ते में मुझे गेहूँ के फसले लहराती दिख रहे थे जहाँ मुझे लगा एक बेहतरीन चेज़सिक्वेंस के लिए जगह लग रही हें। साथ ही कैम्पस की सुन्दर इमारतें ब्योम्ब्केश बक्सी 2 जैसी पीरियड फ़िल्म के लिए एकदम सही जगह लगती हैं। पूरा बिट्स काफ़ी दिलचस्प और आकर्षक हैं।

प्रश्न: आपकी फिल्म खोसला का घोसला अपने आप में एक नायाब व अलग हटकर फिल्म थी। इस तरह की नई फिल्म बनाने की प्रेरणा कहाँ से मिली?
उत्तर: इस तरह की फ़िल्म बनाने का विचार मेरा खुद का था। मैं 1990 के दशक से ही अपने हम उम्र लोगों की पसंद से अलग फिल्में देखना पसंद करता आया हूँ। मैंने खोसला का घोसला के बाद भी कई नई तरह की फ़िल्में बनाई जो अपने आप में खास थी। इन फ़िल्मों ने फ़िल्म जगत को एक नवीन दृष्टिकोण दिया।

प्रश्न: क्या आप बिट्स के फिल्म मेकिंग क्लब के छात्रों को अपनी तरह की फिल्में बनाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे?
उत्तर : नहीं, मैं नहीं चाहता कि फ़िल्म बनाने वाले आकांक्षी छात्रों पर किसी तरह का दृष्टिकोण दिया जाए। उन्हें फिल्म बनाने के लिए पूरी छूट दी जाए। हर फ़िल्म अपने आप में नायाब होती है। मैं भावी पीढ़ी से यही कहना चाहूँगा कि हर तरह की फ़िल्म को महत्व दें और फ़िल्म जगत को नवीन बनाये रखने का प्रयास करें।

एक नई उपलब्धि

“ क्या यार अथर्व तू फ़ेस्ट में भी पढ़ाई करेगा क्या ?”

“भाई तू तो चार साल में CS पढ़के चला जाएगा। लेकिन मुझे तो इंजीनियरिंग का विषय पहले साल के अंको के आधार पर मिलेगा। छोटी सी गलती और बड़ा खामियाज़ा। मेरे लिए एक-एक मिनट कीमती है, मैं अपोजी के चारों दिन पढ़ाई करूँगा। तू किसी और के साथ गाड़ी डिज़ाइन करले। ”

यह सुनकर रुचित हार मानकर चला जाता है, और अथर्व को उसके कमरे में छोड़ देता है। अथर्व की मेज़ पर किताबों का ढेर पड़ा हुआ था। उसके कमरे की तरह उसका मन भी अस्तव्यस्त था। अपोजी 2023 का थीम ‘अ हाइवमाइंड जेनेसिस’। लेकिन मानो अथर्व अभी भी एंट्रेंस की हाइवमाइंड में अटका हुआ था। ऐसा नहीं है कि सभी डूअल डिग्री के छात्र इस अवस्था में थे। वह बेचारा दसवीं कक्षा के बाद जो परीक्षायों के चक्रव्यू में फसा, बिट्स आने के बाद भी निकल नहीं पाया। इंजिनीयरिंग की भेड़ चाल ने मानो उसे नंबरों का भूखा पशु बना दिया हो जो दिन भर अपनी किताबों में खोया रहता था। ऐसा नहीं है कि वह पढ़ाई में कमज़ोर था, बिट्स पिलानी का छात्र होना अपने आप में एक सफलता का प्रमाण है। अथर्व की गलती यह थी कि वह किताबें पढ़ता नहीं था, चरता था। यदि कोई विषय समझ ना आता, वह मानो उसे निगल जाता और परीक्षा में उगल देता। मन ही मन अथर्व अपनी कमज़ोरी जानता था। उस रात वह अपनी किताबों पर ही सिर रखकर सो गया।

सुबह-सुबह अथर्व और रुचित के विंग में चहल-पहल शुरू हो गई। सारे दोस्त एकत्रित होकर अपोजी में आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं की चर्चा कर रहे थे। अथर्व भी उनके समक्ष जाकर खड़ा हो गया। वह सभी अपने ज्ञान की असली परीक्षा देने के लिए उत्सुक थे। जब अथर्व वॉशरूम के शीशे के सामने ब्रश कर रहा था, तब अचानक से उसे एक बहुत महत्वपूर्ण बात का अहसास हुआ। जहाँ उसके दोस्तों में विज्ञान और इंजिनीयरिंग के प्रति जुनून था, उसकी प्रेरणा थी केवल अंक लाना। उसके दोस्त अपने ज्ञान और रचनात्मकता के प्रयोग से नई चीज़ों का निर्माण करते थे, अंकों के लालच ने उसको अंधा बना दिया था। उसे अपनी पुस्तकों के आगे कुछ दिखता ही नहीं था। उस एक क्षण में अथर्व ने यह निर्णय लिया कि वह अपोजी की प्रतियोगिताओं में भाग लेगा। वह दौड़कर अपने कमरे में गया, अलमारी खोलकर नये कपड़े पहने और भागा-भागा अपने दोस्तों के पास गया। “रुको! मैं भी आऊंगा तुम्हारी टीम में।”अपने दोस्त को यूं उत्साहित देख रुचित समेत सभी लड़के खुश हुए। रुचित बोला-“जल्दी आ, हम कार डिज़ाइन प्रतियोगिता में भाग लेने जा रहें हैं।”अथर्व भी उनके साथ नैब चला गया, जहाँ उन्हें कंप्यूटर की सहायता से एक गाड़ी का मॉडल बनाना था। अथर्व की टीम ने ख़ूब सोच विचार किया और दो घंटों में अपना मॉडल तैयार करके पेश किया। उन दो घंटो में अथर्व ने जितना भौतिकी के प्रयोग के बारे में जाना, उतना अपने कमरे में पड़ी किसी किताब से ना सीख पाता। उस प्रतियोगिता के परिणाम आने में कुछ समय था तो अथर्व और उसके दोस्तों की टोली ने फ़ूड स्टॉल्स पर दावत उड़ाई। हाथ में स्वादिष्ट बरगर लेकर वह एक और प्रतियोगिता की नीति बनाने लगे। बाद में पता चला कि उनकी टीम को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है। रात को जब अथर्व अपने कमरे में आया तब उसके मन में एक उपलब्धि का अहसास था। उसने अपना बस्ता रखा और सीधा पलंग पर जा लेटा। आज बहुत दिनों बाद अथर्व अपने दिन से संतुष्ट था। वह सोने ही वाला था कि उसने अपनी आँखे खोली और मेज़ पर जा बैठा, पुरानी आदत जो थी। उसने अपने भौतिक विज्ञान के नोट्स खोलकर निहारे और तब उसे असली विज्ञान की ख़ूबसूरती दिखाई दी।

Buidlers Tribe
ASUS
AUTODESK
BEARDO
EaseMyTrip
LEARNING WHILE TRAVELLING
BeReal.
Walmart
Spheron
CONTINENTAL THIS PREMIX COFFEE
STOCK EDGE
QUICK SMART WASH Smart Wash for Smarter People
SoundideaZ academy
hubhopper
RAW PRESSERY
BOTLAB DYNAMICS
router
FinMapp
FRENCH FACTOR
TOO YUMM! ANYTIME ANYWHERE
HELL ENERGY DRINK
Google Developers
Metvy
Samaro
labdox

अपोजी हिन्दी प्रेस

परीश्री, हार्दिक, लांबा, अदिति, हेमांग, रेहान, वासु, हर्ष, भूषण

आकाश, आदित्य, ऋत्विक, आर्यमन, सर्वेश, जैनम, आरुषी, आर्ची, निशिका, भव्य, हिमांशी, देव

अमृत, **मल्लिका, सर्वाक्ष**, वैष्णवी, विदित, पुलकित, कामरा, अनुज, अवि, वल

अभिन्नआशीष, एकांश, दिव्यम, कौस्तुभ, हर्ष, रिया, केदार
विशेष,मोक्ष, दिवाकर, राहुल, आदित्या, अनुष्का, नमः, कविश,
हर्षवर्धन, भाविनी, आरुषी, प्रिशा, रिशव, प्रीतवर्धन